पेरिस
अक्टूबर, १३, २००७

सन्देश संख्या १२५

हनुमान चालीसा

दक्षिण अफ्रीका के एक जन्तुशाला में जिसमें केवल बन्दर थे, एक बार शिवेन्दु को घुमाया गया । दुनिया के विभिन्न भागों से विभिन्न प्रजातियों के विस्मयकारी बन्दरों को लाकर उस जन्तुशाला में रखा गया था ताकि लोग उन्हें देख सकें और आश्चर्य चकित हो सकें । उसके प्रवेश द्वार पर यह लिखा है – ''मनुष्य को मालूम है कि उसका उत्थान कहाँ से हुआ है, किन्तु उसे अभी भी यह नहीं मालूम कि उसका कितना ज्यादा पतन हो चुका है ।''

मनुष्य अपने सम्बन्धों के प्रत्येक स्तर पर चाहे वह व्यक्तिगत हो या पारिवारिक या सामाजिक या ग्रीय या अन्तरराष्ट्रीय, विरोध एवं अराजकता, उत्तेजना एवं शत्रुता, विभाजन एवं गड़बड़ी, भय एवं विखण्डन, लोभ एवं विध्वंस तथा विश्वास पद्धतियों एवं युद्धों से परिपूर्ण है । तकनीकी विकास तो बहुत हुआ है किन्तु मानसिक पंजीकरण से मुक्ति नहीं मिली है । वह विभेदकारी चित्तवृत्ति में फँसा हुआ है । समझदारी के अभाव में वह नहीं जान पाता कि समस्त मानव–चेतना एक है, बल्कि इसके विपरीत वह मानता है कि ब्रिटिश चेतना, फ्रांसीसी चेतना, रूसी चेतना, चीनी चेतना भिन्न–भिन्न है । भिन्नता तो केवल अनुबन्धनों में है । अतः ब्रिटिश अनुबन्धन, फ्रांसीसी अनुबन्धन इत्यादि भिन्न–भिन्न हैं । हमारे आधुनिक राष्ट्र महिमामण्डित एवं चमक–दमक से परिपूर्ण प्राचीन गुफा ही तो हैं । गुफा–काल में हम पत्थरों के औजारों से हत्याएँ किया करते थे जबकि वर्तमान काल में हम प्रलयकारी हथियारों से किया करते हैं ।

मनुष्य जाति ही एकमात्र ऐसी जाति है जो छोटे–मोटे युद्धों एवं विश्व–युद्धों में अपनी ही जाति के लाखों सदस्यों का संहार करती दिखाई देती है ।

मनुष्य के पूर्व की प्रजाति 'हनुमान' में अहंकार के स्नायवीय दोष का अभाव है । इसी कारण, पृथ्वी के जिस भाग को भारत कहा जाता है, वहाँ के प्राचीन ऋषियों ने जाना कि हनुमान ही भक्ति और भगवत्ता का सही प्रतीक हो सकता है क्यों कि उसकी अन्तर्चेतना में विभाजन और द्वैत नहीं है । वस्तुतः जब भी कोई व्यक्ति विनम्रता एवं शक्ति, ऊर्जा एवं प्रज्ञा और सद्‌गुण एवं समझदारी की प्रतिमूर्त्ति हनुमान के समक्ष झुकता है तभी वह अहंकार एवं स्वार्थ से मुक्त होकर आशीर्वाद के प्रवाह से ओत–प्रोत हो जाता है ।

हनुमान पूर्ण चेतना का प्रतीक है, देदीप्यमान और शून्य है और परम प्रकाश से अलग नहीं किया जा सकता । यह निर्विकार प्रकाश है जो न कभी जन्म लेता है और न ही कभी मरता है क्योंकि यह शाश्वत अस्तित्वमय चिति–शक्ति है ।

रिट्रीट में क्रियावान सांकेतिक 'हनुमान–पूजा' करते हैं । वे उस पूजा में पूरे आनन्द के साथ भाग ले सकें, इसीलिए पूरी हनुमान–चालीसा और उसका अर्थ भी यहाँ दिया जा रहा है । यह सुझाव है कि स्पैनिस, पुर्तगीज, इटैलियन, फ्रांसीसी, जर्मन, ग्रीस, रूसी, बुल्गारियन आदि भाषाओं में भी इसका अनुवाद तैयार किया जाय ताकि वहाँ के क्रियावानों को लाभ हो ।

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर
श्री हनुमान चालीसा
(हनुमान की स्तुति में चालीस दोहे एवं उनका अर्थ)

श्री गुरु चरन सरोज रज निज मन मुकुर सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ।।

अपने गुरु के चरण–कमल के पराग–सदृश धूल लेकर अपने हृदय रूपी दर्पण को स्वच्छ कर मैं अब रघुकुल श्रेष्ठ श्री राम की पवित्र महिमा का गुणगान करता हूँ जो जीवन के चार फलों को देने वाला है ।

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन–कुमार ।
बल बुधि विद्या देहु मोहि हरहु कलेस विकार ।।

मैं कुछ नहीं जानता, इसलिए हे पवनपुत्र, मैं आपका स्मरण करता हूँ । मुझे शक्ति, बुद्धि और प्रज्ञा प्रदान कीजिए और मेरे दुःखों एवं विकारों का नाश कीजिए।

(१) जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर ।।

ज्ञान और गुणों के सागर हनुमान की जय हो । बन्दरों के राजा की जय हो। आपसे तीनों लोक प्रकाशित है ।

(२) रामदूत अतुलित बल धामा ।
अंजनिपुत्र पवनसुत नामा ।।

आप राम के दूत हैं, असीम शक्ति को धारण करने वाले हैं, अंजनी के पुत्र हैं और पवन पुत्र के नाम से जाने जाते हैं ।

(३) महावीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ।।

हे महावीर, आप शक्तिशाली वज्र हैं, बुरे विचारों को समाप्त करने वाले तथा अच्छे विचारों के साथ रहने वाले हैं ।

(४) कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ।।

सोने जैसा वर्ण है और सुन्दर वस्त्रों, कानों में भारी कुण्डल और घुँघराले लटों से सुसज्जित हैं ।

(५) हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजे ।
काँधे मूँज जनेऊ साजे ।।

आपके हाथों में गदा और ध्वज विराजमान है और कंधे पर पवित्र जनेऊ शोभायमान है ।

(६) शंकर सुवन केसरी नंदन ।
तेज प्रताप महा जगबंदन ।।

आप शिव के अवतार हैं और केसरी के पुत्र हैं । सारा संसार आपके तेज और प्रताप की वन्दना करता है ।

(७) विद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ।।

आप प्रज्ञावान, गुणवान और अत्यन्त चतुर हैं और श्रीराम का कार्य करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं ।

(८) प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ।।

प्रभु के कार्यों को सुनने में आप आनन्दित होते हैं तथा राम, लक्ष्मण एवं सीता आपके हृदय में निवास करते हैं ।

(९) सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ।।

अति लघु रूप धारण कर आप सीता के समक्ष प्रकट हुए तथा भयंकर रूप धारण कर आपने लंका को जलाया ।

(१०) भीम रूप धरि असुर संहारे ।
रामचन्द्र के काज सँवारे ।।

अति विशाल रूप धारण कर आपने राक्षसों का संहार किया और प्रभु राम के कार्य को पूर्ण किया ।

(११) लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये ।।

संजीवनी बूटी लाकर आपने लक्ष्मण को पुनर्जीवित किया । श्री राम ने प्रसन्न होकर आपको हृदय से लगा लिया ।

(१२) रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ।।

रघुपति श्रीराम ने आपकी बड़ी प्रशंसा करते हुए कहा – ''आप मुझे भरत–भाई के समान प्रिय हैं ।

(१३) सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावै ।।

''हजारों मुख आपका यशगान करेंगे''–ऐसा कहते हुए लक्ष्मी के स्वामी ने आपको अपने हृदय से लगा लिया ।

(१४) सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ।

सनकादि और ब्रह्मा सहित अन्य मुनिगण, नारद, सरस्वती और सर्पों के राजा,

(१५) यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कबि को बिद कहि सके कहाँ ते ।।

यम, कुबेर, चारों दिशाओं के रक्षक, कविगण, विद्वद्गण – कोई भी आपके यश का वर्णन करने में समर्थ नहीं है ।

(१६) तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राजपद दीन्हा ।।

आपने सुग्रीव का बहुत बड़ा उपकार किया है । राम से मिलवाकर आपने उसे राज्यपद वापस दिला दिया ।

(१७) तुम्हरो मंत्र विभीषन माना ।
लंकेश्वर भये सब जग जाना ।।

विभीषण ने आपकी सलाह मानी और वह लंका का राजा बन गया, सारा जगत यह जानता है ।

(१८) जुग सहस्त्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।

यद्यपि सूर्य करोड़ों मील दूर है, तब भी आपने उसे मीठा फल समझकर निगल लिया ।

(१९) प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं ।।

प्रभु की अँगूठी को अपने मुँह में रखकर आपने छलांग लगाकर समुद्र पार कर लिया इसमें कोई आश्चर्य नहीं ।

(२०) दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।

आपकी कृपा से संसार का कोई भी कठिन कार्य सहज हो जाता है ।

(२१) राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।

आप राम के द्वार के रखवाले हैं, आपकी आज्ञा के बिना कोई भी उसमें प्रवेश नहीं कर सकता ।

(२२) सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रक्षक काहू को डर ना ।।

जो आपकी शरण में आ जाते हैं, सभी सुख पा जाते हैं । जिनकी आप रक्षा करते हैं उन्हें किसी प्रकार का भय नहीं होता ।

(२३) आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक ते काँपै ।।

अपने तेज को आप स्वयं ही संभालते हैं और आपकी गर्जना से तीनों लोक काँप जाते हैं ।

(२४) भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महावीर जब नाम सुनावै ।।

हे महावीर, जब आपके नाम का उच्चारण किया जाता है तब भूत और पिशाच निकट नहीं आते ।

(२५) नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।

हे वीर हनुमान, आपके नाम का निरन्तर जाप करने से समस्त रोगों और दुःखों का नाश हो जाता है ।

(२६) संकट ते हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।

हे हनुमान, आप उन्हें संकट से उबार लेते हैं जो विचार, वाणी और कर्मों से आपको याद करते हैं ।

(२७) सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिनके काज सकल तुम साजा ।।

तपस्वी राम सबके राजा हैं, किन्तु उनके सभी कार्यों का निष्पादन आप करते हैं ।

(२८) और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोइ अमित जीवन फल पावै ।।

और भी किसी प्रकार की इच्छा से जब कोई आपके पास आता है, तब वह जीवन के अमित फल प्राप्त करता है ।

(२९) चारों युग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ।।

आपके प्रताप से चारों युग भरा हुआ है । आपके यश से समस्त संसार आलोकित है ।

(३०) साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुआरे ॥
आप साधु–संतों के रक्षक हैं, राक्षसों को मारने वाले हैं तथा राम के प्रिय हैं ।

(३१) अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस वर दीन्ह जानकी माता ।।
आप 'आठ सिद्धियों' और 'नौ निधियों' को देनेवाले हैं, ऐसा वरदान आपको माता जानकी से प्राप्त हैं ।

(३२) राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ।।
राम–नाम रूपी अमृत आपके पास है और सदा के लिए आप राम के सेवक हैं ।

(३३) तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम–जनम के दुख बिसरावै।।
आपका भजन करने वाला व्यक्ति राम को पा लेता है और उसके अनगिनत जन्मों का दुःख न हो जाता है ।

(३४) अंत काल रघुवर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई ।।
मृत्यु के समय वह राम के धाम को उपलब्ध हो जाता है और वहाँ से ईश्वर–भक्त के रूप में जन्म लेता है ।

(३५) और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई ।।
और किसी देवता को हृदय में धारण न कर, मात्र हनुमान की उपासना से ही मनुष्य सभी प्रकार के सुखों को पा लेता है ।

(३६) संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।
जो वीर हनुमान का स्मरण करने वाले हैं उनके सभी संकट और दुःख दूर हो जाते हैं ।

(३७) जय जय जय हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरूदेव की नाईं ।।
प्रभु हनुमान, आपकी सदा जय हो, जय हो, जय हो । आप मुझ पर मेरे गुरू देव के समान कृपा कीजिए ।

(३८) जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बँदि महासुख होई ।।
जो कोई भी इसका सौ बार पाठ करता है वह बन्धनों से मुक्त हो जाता है और परमानन्द को प्राप्त करता है ।

(३९) जो पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ।।
जो यह हनुमान चालीसा पढ़ता है, अपनी साधना में सिद्धि को उपलब्ध हो जाता है, गौरी के स्वामी अर्थात् शिव इसके साक्षी है ।

(४०) तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।
हमेशा प्रभु का सेवक रहने वाले तुलसीदास कहते हैं, ''हे प्रभु, मेरे हृदय में आप निवास कीजिए ।''

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम रखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ।।

हे पवन पुत्र, हे संकट हरने वाले, हे मंगल की मूर्ति तथा हे देवताओं के राजा, आप राम, लक्ष्मण और सीता सहित मेरे हृदय में निवास करें ।

।। सियावर रामचन्द्र पद जय शरणम् ।।असुर निकंदन राम दुलारे ।।